DAT. 25.11.24
PAGE No. 1

Tender Heart High School, Sec. 33-B, Chd.

कक्षा - चौथी शिक्षिकाएँ - सुमन शर्मा, रोमा रानी
विषय - हिंदी साहित्य (पाठ-11 'अपना-अपना जीवन')-1
लेखक - रामेश्वर कांबोज हिमांशु
पुस्तक - नवतरंग-4

सुप्रभात प्यारे बच्चो!

आज हम पुस्तक नवतरंग भाग-4 के पृष्ठ 71 पर दिए पाठ-11 'अपना-अपना जीवन' को पढ़ेंगे। सब बच्चे ध्यानपूर्वक पाठ को पढ़ेंगे, सुनेंगे व समझेंगे।

बच्चो! प्रत्येक प्राणी अपनी तरह से जीवन जीता है। आज़ादी सबको अच्छी लगती है, लेकिन आज़ादी का आनंद उठाने के लिए कुछ कीमत भी चुकानी पड़ती है। वह चाहे मेहनत के रूप में हो, चाहे सहनशीलता के रूप हो।

बच्चो! यह पाठ एक कहानी के रूप में है, जो एक बैल और एक तोते की है। यह पूरी कहानी बैल और तोते के बीच वार्तालाप के रूप में लिखी गई है।

बच्चो! एक बैल खूँटे पर बँधा हुआ था। बैल को खूँटे से बँधा हुआ देखकर तोते को हँसी आ गई और वह बोला, "बैल भाई! तुम्हारा जीवन भी कैसा जीवन है! दिन भर तुम्हें हल खींचना पड़ता है। किसान के डंडे खाने पड़ते हैं, तब जाकर तुम्हें चारा मिलता है। दिन की चिलचिलाती धूप भी तुम्हें अपनी पीठ पर झेलनी पड़ती है।" तोते की बात सुनकर बैल चारा खाते-खाते रुका और बोला, "तुम्हारी तरह दिनभर चार दानों के लिए मीलों-मील मारामारी तो नहीं करनी पड़ती। मेरे घर लौटने पर इतना तो तय है कि मुझे पेट भरने के लिए पूरा चारा मिल जाएगा। किसान मुझे चारा खिलाएगा तो फिर वह काम तो लेगा ही। बिना काम किए खाना भी ठीक नहीं है और तुम तो कोई काम भी नहीं करते हो।

(पृष्ठ-1)

Scanned with CamScanner

कक्षा - चौथी शिक्षिकाएँ - सुमन शर्मा, रोमा रानी
विषय - हिंदी साहित्य (पाठ-11 अपना-अपना जीवन)-1

चुपके से किसी के मक्का के खेत में घुस जाते हो। किसी के भी बाग में चोरी-छिपे जाकर फल कुतरने लगते हो। यह भला कोई अच्छी बात है!"

तोते ने आँखें मटकाकर कहा, "इस तरह खाने का अपना ही आनंद है। तरह-तरह के फल खाने को मिल जाते हैं। अच्छे फल ढूँढ़ने के लिए भी तो मेहनत करनी पड़ती है। आज़ादी का मज़ा ही कुछ अलग होता है! तुम तो अपनी मर्ज़ी से न कहीं जा सकते हो, न खा सकते हो। तुम्हारे मालिक जो चने की बढ़िया दाल खाते हैं, हम उनके आँगन में जाकर कुछ दाने उसमें से भी खा लेते हैं। तुम्हारे आँगन में लगे आम के पेड़ से बढ़िया आमों का आनंद हम ही सबसे पहले उठाते हैं, तुम्हारे मालिक से भी पहले। बैल भाई! तुमने तो आम कभी चखे भी नहीं होंगे।"

बच्चो! अभिमानी तोते की बात सुनकर बैल कहाँ चुप रहने वाला था। उसने तोते की बात का उत्तर देते हुए कहा, "ठंड और बारिश में मैं अलग कोठरी में रहता हूँ। तुम्हें तो ठंड, बारिश और ओलों की मार झेलनी पड़ती है।

बच्चो! बैल की बात सुनकर तोता दुखी मन से बोला, "अरे भाई! हम भी किसी मकान के कोने में जाकर दुबक जाते हैं। किस्मत तो सभी के साथ है। हमें शिकारी मार गिराते हैं। चिड़ीमार पकड़कर पिंजरे में बंद कर लेते हैं। बाज भी झपट्टा मारकर हमें गिरा देता है और फिर मार देता है। आज़ादी मिली है, तो उसकी कीमत तो चुकानी ही पड़ेगी। आनंद और आज़ादी कोई मुफ़्त में थोड़े ही मिलते हैं!" इसके बाद भी तोते ने अपनी बात को महत्त्व देते कहा, (पृष्ठ-2)

Scanned with CamScanner

कक्षा- चौथी शिक्षिकाएँ- सुमन शर्मा, रोमा रानी
विषय- हिंदी साहित्य (पाठ-11 'अपना-अपना जीवन')

"खुली हवा में साँस लेने का आनंद ही कुछ और होता है।" तोते की यह बात सुनकर बैल ने भी अपने समर्थन में सिर हिलाकर कहा, "तुम सही कहते हो, परंतु मेरा जीवन केवल मेरे लिए नहीं है। मैं जिस फसल को उगाने में मदद करता हूँ, उससे पूरे परिवार का पालन-पोषण होता है। मेरा मालिक मुझे चारा खिलाने के बाद ही खाना खाता है। मेरा जीवन तोता भाई तुम्हारी तरह आज़ाद भले ही न हो, परंतु एकदम निरर्थक भी नहीं है।"

बच्चो! जब बैल ने यह बात कही तो तोते को बैल की बात सही लगी और वह बोला, "हम दोनों ही अपनी-अपनी जगह सही हैं। कुदरत ने हमारा जीवन जैसा बनाया है, हमें वैसा ही जीवन जीना है। अच्छा चलता हूँ।" ऐसा कहकर तोता फुर्र से उड़ गया। बैल बहुत देर तक सिर उठाए आकाश की तरफ़ उसे देखता ही रहा।

बच्चो! यह पाठ यहाँ समाप्त हुआ। आशा है आप सबने यह कहानी आनन्दित होकर सुनी, पढ़ी व समझी होगी। अब मैं आपको गृहकार्य दे रही हूँ।

गृहकार्य:- सब बच्चे पृष्ठ-82 पर लिखे शब्दार्थ को आप अपनी अभ्यास-पुस्तिका में लिखेंगे। पाठ बोध के प्रश्न-1 और 2 को लिखने का प्रयास करेंगे।

धन्यवाद।

(अंतिम पृष्ठ-3)

Scanned with CamScanner